वीरगाथाकाल के अन्य कवि

विद्यापति (14वीं शती)

इनकी तीन रचनाएँ प्रसिद्ध हैं– **कीर्तिलता, कीर्तिपताका** एवं **पदावली**। **कीर्तिलता** ऐतिहासिक महत्त्व का छोटा-सा प्रबंध-काव्य है। विद्यापति ने इसे 'कहाणी' कहा है। मध्यकाल में ऐतिहासिक व्यक्तियों को आधार बनाकर जो काव्य लिखे गए हैं, वे ऐतिहासिकता से रहित होकर कथानक-रूढ़ियों, किंवदंतियों, अनुश्रुतियों आदि के विषय बन गए हैं। इसी प्रकार घटनाओं को भी तोड़ा-मरोड़ा गया है। **कीर्तिलता** इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण अपवाद है। उसकी ऐतिहासिकता बहुत-कुछ सुरक्षित है। इसमें विद्यापति ने कीर्तिसिंह द्वारा अपने पिता का बदला लेने का वर्णन बहुत यथार्थपरक ढंग से किया है। **कीर्तिलता** को कवि ने 'अवहट्ट' भाषा में रचा है। 'अवहट्ट' देशी भाषा यानी मैथिल-युक्त विकसित अपभ्रंश है। इसके गद्य में तत्सम शब्दों का प्रयोग खुलकर हुआ है।

पदावली विद्यापति के यश का आधार है। **पदावली** ऐसी रचना है, जो काव्योत्कर्ष और साहित्य का इतिहास, दोनों दृष्टियों से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसमें राधा-कृष्ण अपना अलौकिकत्व छोड़कर लौकिक व्यक्तियों के समान प्रेम-भावना से विह्वल होते हैं। लोक में जिस प्रकार किशोरी दुर्निवार प्रियमिलन और लोकलाज के कारण तीव्र अंतर्द्वंद्व झेलती है, उसी प्रकार राधा को चित्रित किया गया है। कवि का मन वयःसंधि का चित्रण करने में विशेष रूप से रमा है। इसलिए इस बात को लेकर काफ़ी विवाद है कि **पदावली** भक्तिपरक रचना है या शृंगारपरक। वस्तुतः जयदेव का **गीतगोविंद**, विद्यापति की **पदावली** और सूरदास का **सूरसागर** एक ही कोटि की रचनाएँ हैं, जिनमें भक्ति का आधार शृंगार है। **पदावली** के एक पद की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

सरस बसंत समय भल पावलि दछिन पवन बह धीरे।
सपनहु रूप बचन इक भाषिय मुख से दूरि करु चीरे।।
तोहर बदन सम चाँद होअथि नाहिं कै यो जतन बिह केला।
कै बेरि काटि बनावल नव कै तैयो तुलित नहिं भेला।।
भनइ विद्यापति सुन वर जोवित ई सम लछमि समाने।
राजा सिवसिंह रूप नरायन 'लखिमा देइ' प्रति भाने।।

अमीर खुसरो(14वीं शती)

अमीर खुसरो इस युग के अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति हैं। उनके काव्योत्कर्ष का प्रमाण उनकी फ़ारसी रचनाएँ हैं। वे संगीतज्ञ, इतिहासकार, कोशकार, बहुभाषाविद्, सूफ़ी औलिया, कवि–बहुत कुछ थे। उनकी हिंदी रचनाएँ अत्यंत लोकप्रिय रही हैं। उनकी पहेलियाँ, मुकरियाँ, दो सुखने अभी तक लोगों की ज़बान पर हैं। उनके नाम से निम्नलिखित दोहा बहुत प्रसिद्ध है (कहते हैं कि यह दोहा खुसरो ने ख्वाज़ा निज़ामुद्दीन चिश्ती के देहांत पर कहा था)–

गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केस।
चल खुसरो घर आपने, रैन भई चहुँ देस।।

किंतु उनकी हिंदी रचनाओं का ऐतिहासिक महत्त्व अधिक है। उनकी भाषा, हिंदी की आधुनिक काव्य-भाषा के रूप में पूर्णत: प्रतिष्ठित होने का संकेत देती है। उनका व्यक्तित्व और उनकी हिंदी इस बात को प्रमाणित करती है कि हिंदी काव्य प्रारंभ से ही मध्य देश की मिली-जुली संस्कृति का चित्र रहा है। उन्होंने ऐसी पंक्तियाँ रची हैं, जिनमें फ़ारसी और हिंदी को एक ही ध्वनि प्रवाह में गुंफित कर दिया गया है। यह कला संस्कृति-साधक को ही सिद्ध हो सकती है–

ज़े हाल मिसकीं मकुन तग़ाफ़ुल दुराय नैना, बनाय बतियाँ।
कि ताबे हिज्राँ न दारम ऐ जाँ! न लेहु काहे लगाय छतियाँ।।
शबाने हिज्राँ दराज़ चूं ज़ुल्फ़ व रोज़े वसलत चूँ उम्र कोतह।
*सखी! पिया को जो मैं न देखूँ तो कैसे काटूँ अँधेरी रतियाँ।।**

आदिकाल की सामान्य विशेषताएँ

यों तो इतिहास का प्रत्येक युग परस्परविरोधी एवं प्रधान-अप्रधान प्रवृत्तियों का युग होता है, किंतु आदिकाल के विषय में यह बात विशेष रूप से रेखांकित करने योग्य है। वह राजनीतिक दृष्टि से छोटे-छोटे सामंतों में विभक्त प्रदेश का

---

* मेरी इस (वियोग की) स्थिति में उपेक्षा मत कर, बातें बनाकर और आँखों से दूर हटने का संकेत देकर।
हे प्रिय! मुझमें वियोग को सहने की शक्ति नहीं है। मुझे छाती से क्यों नहीं लगा लेतीं।
वियोग की रातें तुम्हारी जुल्फों की तरह लंबी हैं और मिलन के दिन उम्र के समान कम हैं।
हे सखि! यदि मैं अपने प्रिय को न देखूँ तो वियोग की अंधकारमयी रातें कैसे बिताऊँ।